भारत का राजनीतिक वातावरण

*राम अवतार मीना

भारत में संघीय स्वरूप के अंतर्गत संसदीय शासन प्रणाली एवं धर्मनिरपेक्ष लोकतंत्र जिसमे राष्ट्र प्रमुख राष्ट्रपति का चुनाव अप्रत्यक्ष रूप से होता है जो राष्ट्र का प्रथम नागरिक भी है तथा शासन का संपूर्ण कार्य राष्ट्रपति के नाम से प्रधानमंत्री द्वारा किया जाता है इस प्रकार से भारत में स्वस्थ लोकतांत्रिक शासन प्रणाली के वातावरण में शक्ति विकेंद्रीकरण के आधार पर केंद्र एवं राज्य सरकारों का वर्णन किया गया है ।

भारत में शासन का स्वरूप:- भारत में ब्रिटिश शासन काल के आधार पर संसदीय शासन प्रणाली को अपनाया गया है और अमेरिका की तरह संयुक्त सरकारों का भी प्रावधान रहा है। भारत में केंद्र सरकार राज्यों से अधिक शक्तिशाली होती है उसे आंतरिक एवं बाहरी दोनों मोर्चों पर अंतिम निर्णय लेने का अधिकार होता है। लेकिन इसके बावजूद भी राज्य स्तर पर मुख्यमंत्री वास्तविक प्रधान जबकि राज्यपाल नाम मात्र का शासक होता है क्योंकि जनता द्वारा प्रत्यक्ष चुनाव में विधायकों के माध्यम से मुख्यमंत्री का चुनाव किया जाता है जो जनता के प्रति उत्तरदाई है। जबकि केंद्र स्तर पर सांसदों के द्वारा प्रधानमंत्री का चुनाव किया जाता है जो की संपूर्ण शासन प्रणाली की धुरी है ।

राजनीतिक पर्यावरण:- राजनीतिक कानूनी वातावरण कई घटकों का समायोजन है जिसमें राजनीतिक दल, सत्ता एवं संगठन, व्यापारिक राजनीतिकरण, सरकार की नीतियां एवं क्षमता तथा कानूनी ढांचा, जनता का शासन एवं संगठनों के प्रति रवैया, सरकार की चाल, चरित्र, चेहरा और सरकार की जनता तक पहुंचे। सरकार के प्रति जनता में रुचि एवं भागीदारी के पीछे सरकार द्वारा आर्थिक, सामाजिक, व्यवसायिक सुरक्षा का वातावरण बनाना है। अर्थात देश में सरकार द्वारा भ्रष्टाचार मुक्त प्रशासन, जन भागीदारी एव जनकल्याण तथा कानून और अंतरराष्ट्रीय मूल्य के आधार पर शासन का सचालन करना।

भारत में राजनीतिक स्वरूप के तत्व:- आज भारत में राजनीतिक स्वरूप महत्वपूर्ण मुद्दों पर आधारित है। जैसे - आतंकवाद, नक्सलवाद, धार्मिक हिंस जातीय हिंसा, भाषाई हिंसा, क्षेत्रवाद, भ्रष्टाचार, बेरोजगारी, अशिक्षा, जनसंख्या विस्तार के आधार पर राजनीतिक वातावरण का निर्माण होता है क्योंकि ये मुददे सरकार गठन में अहम भूमिका निभाते हैं और उनके आधार पर ही राष्ट्र का राजनीतिक, सामाजिक आर्थिक ढांचा बनता एवं बिगडता है। अर्थात भारत में सरकार गठन से लेकर सामाजिक एवं व्यवसायिक गतिविधियों के सफल संचालन में इन मुद्दों का अहम योगदान होता है।

राजनीतिक और सरकारी वातावरण

सरकार अपने द्वारा बनाए और लागू किए गए कानूनों और विनियमों के माध्यम से व्यवसायों के लिए राजनीतिक माहौल तैयार करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। कुछ प्रमुख तरीके जिनसे सरकार कारोबारी माहौल को प्रभावित करती है, नीचे बताए गए हैं।

- कराधान: कर आवश्यक सीमाएँ हैं जिन्हें सरकार को देश की सरकार को भुगतान करने की आवश्यकता होती है। कराधान कानून जितने अधिक सख्त होंगे और वे जितने अधिक आक्रामक होंगे, उतनी ही अधिक संभावना होगी कि कंपनियों को आगे बढ़ने में कठिनाई होगी।
- श्रम कानून : सरकारें ऐसे कानून बनाती हैं जो श्रम प्रथाओं और कार्यस्थल सुरक्षा को विनियमित करते हैं। श्रम कानून वह ढांचा है जिसके अनुसार किसी संगठन में लोगों के साथ व्यवहार किया जाता है। वेतन पैकेज, लैंगिक समानता आदि श्रम कानूनों पर निर्भर करते हैं।
- व्यापार नीतियां: सरकारें ऐसी नीतियां बनाती हैं जो अंतर्राष्ट्रीय व्यापार को नियंत्रित करती हैं, जैसे टैरिफ और कोटा। ये नीतियां इस बात पर प्रभाव डाल सकती हैं कि व्यवसाय वस्तुओं और सेवाओं का आयात और निर्यात कैसे करते हैं, जिससे उनके निचले स्तर के मुनाफे पर असर पड़ता है।
- पर्यावरण नियम: सरकारें ऐसे कानून और नियम बनाती हैं जो नियंत्रित करते हैं कि कंपनियां पर्यावरण की रक्षा के लिए कैसे काम कर सकती हैं।
- प्रतिस्पर्धा नीतियां: सरकारें एकाधिकार को रोकने और उपभोक्ता अधिकारों की रक्षा के लिए व्यवसायों के बीच निष्पक्ष प्रतिस्पर्धा को विनियमित करने वाली नीतियां निर्धारित करती हैं।
- वित्तीय नियम: सरकारें स्थिरता, अखंडता और पारदर्शिता सुनिश्चित करने और धोखाधड़ी को रोकने के लिए वित्तीय संस्थानों और बाजारों की निगरानी करने वाले नियम निर्धारित करती हैं।

सरकार कारोबारी माहौल को कैसे प्रभावित करती है?

सरकार अपनी नीतियों, विनियमों और कानूनों के माध्यम से कारोबारी माहौल को प्रभावित कर सकती है। उदाहरण के लिए, सरकार कर कानूनों, पर्यावरण नियमों या श्रम कानूनों को बदलकर व्यवसायों को प्रभावित कर सकती है।

सरकार ब्याज दरें निर्धारित करके, मुद्रा को विनियमित करके और मुद्रास्फीति को नियंत्रित करके अर्थव्यवस्था को प्रभावित कर सकती है। ये कार्रवाइयां व्यवसायों को बहुत प्रभावित कर सकती हैं और उनके लिए प्रभावी ढंग से काम करना मुश्किल बना सकती हैं।

व्यवसाय में राजनीतिक वातावरण

व्यावसायिक संदर्भ में, राजनीतिक वातावरण उन कानूनों, विनियमों और सरकारी नीतियों को संदर्भित करता है जो कंपनियों के संचालन और प्रदर्शन को प्रभावित कर सकते हैं। कंपनियों को व्यवसाय में बने रहने के लिए बदलते राजनीतिक माहौल पर नजर रखनी चाहिए। किसी भी राजनीतिक परिवर्तन से कंपनी के काम करने के तरीके के साथ-साथ उसके ग्राहक, आपूर्तिकर्ता और वितरकों पर भी महत्वपूर्ण बदलाव आते हैं। चाहे वह स्थानीय, राष्ट्रीय या अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर हो, राजनीतिक माहौल किसी व्यवसाय के संचालन और सफलता पर भारी प्रभाव डाल सकता है। किसी व्यवसाय के राजनीतिक माहौल पर विचार करते समय कई कारक काम में आते हैं, जैसे व्यापार समझौते, नियम, विनियम आदि।

किसी भी व्यवसाय में राजनीतिक माहौल हमेशा एक महत्वपूर्ण कारक होता है। ऐसा भी हो सकता है कि सरकार ऐसे कानून पारित कर दे, जिससे कंपनी का कामकाज प्रभावित हो. उदाहरण के लिए, नीचे बताए गए को देखें।

- सरकार पर्यावरण नियम बना सकती है जो कंपनियों को अपना व्यवसाय बदलने के लिए मजबूर करती है।
- राजनीतिक माहौल किसी कंपनी की वित्तपोषण प्राप्त करने की क्षमता को भी प्रभावित कर सकता है। यदि सरकार अस्थिर है, तो बैंक और अन्य ऋणदाता उस देश में व्यवसायों को ऋण देने के इच्छुक नहीं हो सकते हैं।
- राजनीतिक वातावरण भी उपभोक्ता व्यवहार को प्रभावित कर सकता है। विभिन्न देशों के ग्राहक उस देश की सरकार के कामकाज के तरीके से प्रभावित होते हैं।

भारत के राजनीतिक वातावरण का सार रूप:

किसी देश का राजनीतिक माहौल कारोबारी माहौल पर महत्वपूर्ण प्रभाव डाल सकता है। राजनीतिक कारकों में सरकार की स्थिरता, व्यापार नियम और कराधान नीतियां जैसी चीज़ें शामिल हो सकती हैं।

राजनीतिक स्थिरता

राजनीतिक स्थिरता कारोबारी माहौल को प्रभावित करने वाले सबसे महत्वपूर्ण कारकों में से एक है। कंपनियों के फलने-फूलने के लिए एक स्थिर राजनीतिक वातावरण आवश्यक है, जो निवेश और आर्थिक विकास के लिए महत्वपूर्ण स्थितियाँ प्रदान करता है। हालाँकि, हाल के वर्षों में, कई देशों में राजनीतिक उतार-चढ़ाव का अनुभव हुआ है, जिससे व्यवसायों को नुकसान हुआ है। अस्थिरता के कारण करों और विनियमों में वृद्धि हो सकती है, साथ ही व्यापार प्रतिबंध भी लग सकते हैं। इससे व्यवसायों को संचालित करना मुश्किल हो सकता है और अंततः निवेश और आर्थिक विकास का स्तर कम हो सकता है।

विदेश व्यापार विनियमन

व्यापार नियम यह निर्धारित करके कंपनियों को प्रभावित कर सकते हैं कि अन्य देशों के साथ किन वस्तुओं और सेवाओं का व्यापार किया जा सकता है।

आर्थिक नीतियां और कराधान

कराधान नीतियां व्यवसायों को भी प्रभावित कर सकती हैं, क्योंकि विभिन्न कर दरें किसी फर्म की लाभप्रदता को प्रभावित कर सकती हैं। आर्थिक नीतियां मुद्रास्फीति और ब्याज दरों जैसे कारकों को प्रभावित करते हुए, अर्थव्यवस्था को प्रबंधित करने के तरीके को निर्धारित करके व्यवसायों को प्रभावित कर सकती हैं।

सरकारी खर्च और बुनियादी ढांचा विकास

सरकारी खर्च आर्थिक विकास को बढ़ावा देने और व्यावसायिक विकल्प बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। बुनियादी ढांचे के विकास, स्वास्थ्य देखभाल, शिक्षा और प्रौद्योगिकी पर बढ़ा हुआ सरकारी व्यय मांग पैदा कर सकता है और नए व्यापार बाजार खोल सकता है। सार्वजनिक-निजी भागीदारी (पीपीपी) और सरकारी अनुबंध निर्माण, परिवहन और प्रौद्योगिकी जैसे क्षेत्रों में व्यावसायिक विकल्प प्रदान कर सकते हैं।

कॉर्पोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व (सीएसआर) अपेक्षाएँ

राजनीतिक और सामाजिक प्रत्याशाएं तेजी से मांग कर रही हैं कि कंपनियां कॉर्पोरेट सामाजिक जिम्मेदारी (सीएसआर) प्रथाओं को दिखाएं। सरकारें और जनमत यह चाह सकते हैं कि कंपनियां पर्यावरणीय स्थिरता, सामाजिक न्याय,

विविधता और समावेशन और नैतिक प्रथाओं पर ध्यान दें। इन अपेक्षाओं के साथ तालमेल बिठाने से व्यवसायों को सकारात्मक प्रतिष्ठा बनाए रखने, ग्राहकों को आकर्षित करने और हितधारकों के साथ दीर्घकालिक संबंधों को बढ़ावा देने में मदद मिल सकती है।

वर्तमान भारत में राजनीतिक वातावरण का प्रभाव बहुत बढ़ता जा रहा है। किसी देश में प्रचलित राजनीतिक प्रणाली उस देश की व्यवसायिक गतिविधियों को तय करती है साथ ही बढ़ावा देती है एवं उन पर नियंत्रण, निर्देशन तथा आश्रय का काम भी करती है। जब राष्ट्र में कुशल, ईमानदार, गतिशील, जन सहयोग, जन कल्याणकारी एवं कानूनी आधार पर नागरिक एवं मानवीय मूल्यों की रक्षक सरकार हो तो उस राष्ट्र का राजनीतिक वातावरण आदर्श समाज का निर्माण करता है। और इस तरह राष्ट्र का भविष्य भी उज्जवल दिखाई देता है और इस प्रकार का वातावरण आज भारत में दिखाई दे रहा है जिसके परिणाम स्वरूप अब लगातार देश में विदेशी निवेश बढ़ रहा है। हमारी आंतरिक एवं भारी सुरक्षा चिताओं पर विराम लग चुका है क्योंकि पिछले कुछ दशकों में मिली जुली सरकारों के दौर में इन चिताओं का आकार बढ़ता जा रहा था और हमारा राजनीतिक वातावरण भी क्षेत्रवाद, भाषावाद, वर्गवाद, अलगाववाद, आतंकवाद की भेंट चढ़ता जा रहा था परंतु अब हमारे राजनीतिक वातावरण में तो स्थायित्व आया है। मगर धार्मिक उन्माद के प्रभाव से सामाजिक सौहार्द में बिखराव बढ़ता जा रहा है जिस कारण से सामाजिक सुरक्षा पर प्रश्न चिन्ह खड़ा हुआ है। अतः हमें वैश्विक स्तर पर खरा उतरने के लिए हमारे राष्ट्र के संपूर्ण राजनीतिक एवं सामाजिक वातावरण में सुधार कर सुदृढ़ लोकतांत्रिक मूल्यों के आधार पर सामाजिक एवं राजनीतिक सौहार्द पर व्यावसायिक ढाँचे के आधार पर सभी वर्गों में सामान्यजस बनाना होगा ताकि भारत का भविष्य उज्जवल बनता चला जाए अतः हमें सामाजिक सुरक्षा के प्रश्न पर एवं जातिय हिंसा एवं धार्मिक उन्माद पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है क्योंकि इससे हमारा राजनीतिक वातावरण दूषित होता जा रहा है क्योंकि आज भारत में धर्म एवं राजनीति का मिश्रण बढ़ रहा है जो भारत के धर्मनिरपेक्ष स्वरूप एवं स्वस्थ लोकतंत्र, के राजनीतिक वातावरण के लिए घातक हो सकता है।

***सहायक आचार्य राजनीतिक विज्ञान**
राजकीय महाविद्यालय,
करौली (राज.)